Hemwati Nandan Bahuguna

Hemwati Nandan Bahuguna was born at Bhugani- Pauri Garhwal (Uttarakhand) on 25th April, 1919. His father was Sri Rewati Nandan Bahuguna and his mother was Smt. Purna Bahuguna. He studied in Government Primary school Dewalgarh, in middle school at Pauri- Garhwal and class X from Dehradun. He took his intermediate degree from Government Inter College, Allahabad and his graduation was completed from Allahabad University, Allahabad in 1946.

Sri Bahuguna entered students politics at the age of 17 yrs during his study at Government Inter College, Allahabad. His leadership qualities surfaced when he organized a mock Parliament in GIC. He went to Anand Bhawan to invite Pt. Jawahar Lal Nehru to inaugurate it. Upon his suggestion Sri Ranjeet Pandit husband of Smt. Vijay Laxmi Pandit attended the programme and was highly impressed with the confidence and leadership qualities of the young hill boy.

He became a frequent visitor to Anand Bhawan and Swaraj Bhawan and was infused with the desire of Independence under the Congress flag. Upon admission in the Allahabad University he joined the students' movement against the British Government. He led the 1942 Quit India Movement as acting President of Allahabad University for which an arrest warrant was issued against him. For some time he went underground but was soon arrested and awarded the sentence of life imprisonment. He spent the next 3½ yrs in Naini and Sultanpur Jails but was released in 1946 on health grounds as he was suffering with severe pleurisy and was quite critical.

After independence he was associated with the Indian National Trade Union Congress (INTUC) and fought for the right of the working class. Soon he was elected as President of several worker unions in Allahabad and emerged as the leader of the working class.

As a Congress member he started his career in the organization as a ward president. He was deeply influenced by Gandhi – Nehru ideology and Sri Lal Bahadur Shastri became his guiding force.

He was elected from Lok Sabha constituencies of Allahabad and Lucknow in 1971 & 1977 respectively and again from Pauri, Garhwal in 1979 & 1982. He was the Chief Minister of UP during 1973 to 1975. He held the Communications Ministry during 1971-73, Pertroleum & Chemical Ministry from 1977-79 and Finance Ministry in 1979 in the Central Government.

He left Congress in 1977 in opposition to emergency and formed a new Party "Congress For Democracy" (CFD) alongwith Sri Jagjeevan Ram and contested Lok Sabha elections in alliance with other political parties. CFD merged in Janta Party after Government formation in 1977. He left Janta Party and rejoined Congress in 1979. He was appointed as Secretary General of AICC (a new post created for him outside the Constitution of Congress Party). In 1980 he left Congress on the issue of distribution of Party tickets in U.P. Vidhan Sabha elections and also resigned from his Lok Sabha seat and contested as an Independent candidate from Pauri Garhwal. The election continued for nearly 2 years as it was cancelled or countermanded by the Election Commission.

Sri Bahuguna passed away on March 17, 1989 in Cleaveland, USA, during a heart surgery. Sri Bahuguna is fondly remembered for his administrative & organizational abilities also for upholding secular & socialist values all his life.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Hemwati Nandan Bahuguna.

Credits:

Text	: Based on the information received from proponent
Stamp/ FDC/ Brochure Cancellation Cachet	: Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग

Department of Posts India

हेमवती नन्दन बहुगुणा

HEMWATI NANDAN BAHUGUNA

विवरणिका BROCHURE

हेमवती नन्दन बहुगुणा

हेमवती नन्दन बहुगुणा का जन्म 25 अप्रैल, 1919 को भुगाणी, पौढ़ी गढ़वाल (उत्तराखंड) में हुआ था। उनके पिता का नाम रेवती नंदन बहुगुणा था और उनकी मां का नाम श्रीमती पूरना बहुगुणा था। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा देवलगढ़ के एक सरकारी विद्यालय में, मिडिल क्लास की शिक्षा पौढ़ी गढ़वाल में तथा दसवीं कक्षा की शिक्षा देहरादून में ग्रहण की। उन्होंने गवर्नमेंट इंटर कॉलेज, इलाहाबाद से इंटरमीडिएट की डिग्री प्राप्त की तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से वर्ष 1946 में ग्रेजुएट हुए।

श्री बहुगुणा, 17 वर्ष की आयु में छात्र राजनीति में आए। उस समय वे गवर्नमेंट इंटर कॉलेज, इलाहाबाद में अध्ययनरत थे। गवर्नमेंट इंटर कॉलेज में एक मॉक संसद का आयोजन किए जाने के दौरान उनकी नेतृत्व क्षमता उभरकर आई। उन्होंने आनंद भवन जाकर पंडित जवाहरलाल नेहरू को इसके उदघाटन के लिए आमंत्रित किया। उनके सुझाव पर श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित के पति श्री रंजीत पंडित इस कार्यक्रम में शामिल हुए। वे इस हिमालय पुत्र के आत्म विश्वास और नेतृत्व क्षमता से बहुत प्रभावित हुए।

वे प्रायः आनंद भवन और स्वराज भवन आने–जाने लगे तथा कांग्रेस के झण्डे तले स्वतंत्रता आंदोलन में रुचि दिखाने लगे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने के पश्चात, वे अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ छात्र आंदोलन में शामिल हो गए। 1942 के "भारत छोड़ो आंदोलन" में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र संघ के कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में उन्होंने छात्रों का नेतृत्व किया, जिसके लिए उनके विरुद्ध गिरफ्तारी वारंट भी जारी हुआ। कुछ समय वे अज्ञातवास में रहे, परन्तु शीघ्र ही गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। अगले 3.5 वर्ष उन्होंने नैनी और सुलतानपुर जेल में व्यतीत किए, किन्तु खराब स्वास्थ्य के कारण उन्हें 1946 में रिहा कर दिया गया, क्योंकि वे प्लुरिसी बीमारी से ग्रस्त थे और उनका स्वास्थ्य अत्यंत खराब था।

स्वतंत्रता के पश्चात वे भारतीय राष्ट्रीय मजदूर संघ कांग्रेस (आई.एन.टी.यू.सी) के साथ जुड़ गए और कामगार लोगों के अधिकारों की लड़ाई लड़ने लगे। शीघ्र ही उन्हें इलाहाबाद में कई मजदूर संघों का अध्यक्ष चुना गया और वे मजदूरों के नेता के रूप में उभरे।

कांग्रेस के सदस्य के रूप में उन्होंने वार्ड अध्यक्ष के रूप में कार्य आरंभ किया। वे गांधी–नेहरू विचारधारा से अत्यंत प्रभावित थे तथा लाल बहादुर शास्त्री उनके प्रेरणास्रोत थे।

वे 1971 और 1977 में क्रमशः इलाहाबाद और लखनऊ निर्वाचन क्षेत्र से तथा 1979 में पौढ़ी गढ़वाल से लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए। 1973 से 1975 तक वे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। केंद्र सरकार के अधीन उन्होंने, 1971–73 के दौरान संचार मंत्रालय, 1977–79 के दौरान रसायन मंत्रालय और 1979 में वित मंत्रालय का कार्यभार संभाला।

इमरजेंसी के विरोध में उन्होंने 1977 में कांग्रेस छोड़कर श्री जगजीवन राम के साथ एक नई पार्टी "कांग्रेस फॉर डेमोक्रेसी" (सीएफडी) का गठन किया और अन्य राजनीतिक दलों के साथ मिलकर लोकसभा चुनाव लड़े। 1977 में सरकार बनने के बाद सीएफडी का जनता पार्टी में विलय हो गया। 1979 में जनता पार्टी छोड़कर वे पुनः कांग्रेस पार्टी में आ गए। उन्हें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का महासचिव (कांग्रेस पार्टी के संविधान के बाहर, उनके लिए सृजित पद) नियुक्त किया गया। वर्ष 1980 में उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में पार्टी टिकट के बंटवारे के मुद्दे पर उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी और लोकसभा सीट से भी इस्तीफा दे दिया तथा पौढ़ी गढ़वाल से निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़े। यह चुनाव लगभग 2 वर्ष तक चला, क्योंकि चुनाव आयोग द्वारा इसे निरस्त कर दिया गया था।

17 मार्च, 1989 को अमरीका के क्लीवलैंड में हार्टसर्जरी के दौरान उनका देहान्त हो गया। श्री बहुगुणा को उनकी प्रशासनिक एवं संगठनात्मक क्षमता तथा जीवन पर्यन्त उनकी धर्मनिरपेक्ष और समाजवादी विचारधारा के लिए जाना जाता है।

डाक विभाग श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना पर आधारित

डाकटिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका / विरूपण : श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	601500
Stamps Printed	:	601500
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	भारतीय प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00